



Kafan Choron Ke Inkishafat (Gujarati)

કફન ચોરોં કે ઘન્કિશાફત

- | | | | |
|---------------------------|----|--------------------------------|----|
| ● એક કફન ચોર કી આપબીતી | 01 | ● અઝાબે કબ્ર કા કુરઆન સે સુબૂત | 07 |
| ● શરાબી કા અન્જમ | 04 | ● હમ કયૂં પરેશાન હૈં ? | 10 |
| ● જવાની મેં તૌબા કા ઈન્આમ | 05 | ● બે નમાઝી કી સોહબત સે બચો ! | 13 |

શૈબે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઇસ્લામી, હઝરતે અલ્લામા મૌલાના અબૂ ઝિલાલ

મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અલ્લાહ કાઠિરી રઝવી کاتبہ برکاتہم
العالیہ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
مَا بَعُدَ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

કિતાબ પઢને કી દુઆ

અઝ : શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી હઝરતે અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી રઝવી دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ

દીની કિતાબ યા ઈસ્લામી સબક પઢને સે પહલે જૈલ મેં દી હુ ઈ દુઆ પઢ લીજિયે إِنَّ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى જો કુછ પઢેગે યાદ રહેગા. દુઆ યેહ હૈ :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

તરજમા : ઐ અલ્લાહ ! عَزَّوَجَلَّ ! હમ પર ઈલ્મો હિકમત કે દરવાઝે ખોલ દે ઔર હમ પર અપની રહમત નાઝિલ ફરમા ! ઐ અઝમત ઔર બુરુગી વાલે !

(المستطرف ج ٤٠ ص ٤٠٠ دار الفكر بيروت)

નોટ : અવ્વલ આખિર એક એક બાર દુરુદ શરીફ પઢ લીજિયે.

તાલિબે ગમે મદીના
વ બકીઅ
વ મગિરત
13 શવ્વાલુલ મુકર્રમ 1428 હિ.



કફન ચોરોં કે ઈન્કિશાફાત

યેહ રિસાલા (કફન ચોરોં કે ઈન્કિશાફાત)

શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી હઝરત અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી રઝવી ઝિયાઈ દَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ને ઉર્દૂ ઝબાન મેં તહરીર ફરમાયા હૈ.

મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી) ને ઈસ રિસાલે કો ગુજરાતી રસ્મુલ ખત મેં તરતીબ દે કર પેશ કિયા હૈ ઔર મકતબતુલ મદીના સે શાઅએ કરવાયા હૈ. ઈસ મેં અગર કિસી જગહ કમી બેશી પાએં તો મજલિસે તરાજિમ કો (બ ઝરીઅએ મક્તૂબ, ઈમેઇલ યા sms) મુત્તલઅ ફરમા કર સવાબ કમાઈયે.

રાબિતા : મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી)

મકતબતુલ મદીના, સિલેક્ટેડ હાઉસ, અલિફ કી મસ્જિદ કે સામને, તીન

દરવાઝા, અહમદઆબાદ-1, ગુજરાત, ઈન્ડિયા

MO. 9898732611 E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

कईन योरों के ईन्क़िशाफ़ात

शैतान लाभ सुस्ती दिलाये मगर येह रिसाला (19 सफ़हात) मुकम्मल पढ
लीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ नमाजों और नेकियों की रग़बत और गुनाहों से
नफ़रत बढेगी.

दुइए शरीफ़ की इमीलत

नभियों के सरदार, मक्की मदनी आका صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का
इरमाने दिल् नशीन है : “जब जुमे’रात का दिन आता है अद्लाह पाक
इरिशतों को भेजता है जिन के पास यांटी के कागज़ और सोने के कलम
डोते हैं वोह लिखते हैं, कौन यौमे जुमे’रात और शबे जुमुआ मुज पर
कसरत से दुइटे पाक पढता है.”

(أَفْزَهُوس ج ١ ص ١٨٤ حديث ٦٨٨)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿1﴾ ओक कईन योर की आपबीती (हिंकायत)

उजरते सय्यिदुना हसन असरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के दस्ते मुबारक
पर ओक जैसे कईन योर ने तौबा की जिस ने सेंकड़ों कईन युराये थे.
उजरते सय्यिदुना हसन असरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के ईस्तिफ़सार (या’नी
पूछने) पर उस ने तीन क़ब्रों के पुर असरार वाकिआत बयान किये.
युनान्थे उस ने कहा :

इरमाने मुस्तफ़ा : عمل الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर अक बार दुइदे पाक पढा अद्लाह उंस पर दस रउमतें भेजता है. (مسلم)

आग की जञ्जुरें

अक बार मैं ने अक कब्र षोदी तो उस में अक दिला छिला देने वाला मन्जर था ! क्या देखता हूँ के मुर्दे का येहरा सियाह है, हाथ पाँव में आग की जञ्जुरें हैं और उस के मुँह से धून और पीप जारी है. नीज उस से ईस कदर बढबू आ रही थी के दिमाग इटा जा रहा था. येह षौइनाक मन्जर देख कर मैं डर कर भागने ली वाला था के मुर्दा बोल पडा : क्यूं भागता है ? आ, और सुन, के मुझे किस गुनाह की सजा मिल रही है ! मैं मुर्दे की पुकार सुन कर ठिठक कर षडा हो गया और तमाम हिम्मत ईकट्टी कर के कब्र के करीब गया और जब अन्दर जांक कर देखा तो अजाब के इरिशते उस की गरदन में आग की जञ्जुरें बांधे बैठे थे. मैं ने मुर्दे से पूछा : तू कौन है ? उस ने जवाब दिया : “मैं मुसल्मान ईब्ने मुसल्मान हूँ मगर अइसोस ! मैं शराबी और जानी था और ईसी बढ मस्ती की डालत में मरा और अजाब में गिरिइतार हो गया.” अपना बयान जारी रखते हुअे उस कईन योर ने मजीद बताया :

काला मुर्दा

अक और मौकअ पर जब कईन युराने की गरज से मैं ने कब्र षोदी तो अक काला मुर्दा ज़बान निकाले षडा हो गया ! उस के यारों तरइ आग लपक रही थी, इरिशते उस के गले में जञ्जुरें बांधे षडे थे. उस शप्स ने मुझे देखते ली पुकारा : “भाई ! मैं सप्त प्यासा हूँ मुझे थोडा सा पानी पिला दो.” इरिशतों ने मुज से कहा : षबरदार ! ईस बे नमाजी को पानी मत देना. इर मैं ने हिम्मत कर के उस मुर्दे से पूछा : तू कौन था और तेरा जुर्म क्या है ? उस ने जवाब दिया : “मैं मुसल्मान था मगर अइसोस ! मैं ने अद्लाह करीम की बहुत ना इरमानियां की हैं और मेरी तरह बहुत से गुनाहगार अजाब में गिरिइतार हूँ.” उस ने मजीद कहा :

इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : उस शप्स की नाक पाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुर्रहे पाक न पड़े. (ترمذی)

क़ब्र में बाग

ईसी तरह अेक दइआ मैं ने अेक क़ब्र षोदी तो वोह अन्दर से बहुत वसीअ थी और अेक निहायत षुशनुमा बाग देभा जिस में नहरें बहु रही थीं, अेक हसीनो जमील नौ जवान उस बाग में मजे लूट रहा था. मैं ने उस से पूछा : तुजे किस अमल के सबब येह ईन्आम मिला है ? वोह बोला : मैं ने अेक वाईज (या'नी वा'ज करने वाले) से सुना था के ज़ो शप्स आशूरे के रोज़ छ⁶ रक़अत नइल पड़े अद्लाह पाक उस की मइरत इरमा देता है. लिहाज़ा मैं हर साल आशूरे के दिन 6 रक़अतें पढा करता था.

(راحتُ القلوب ص ٦٠ مُلَخَّصًا)

﴿2﴾ पांर क़ब्रें (हिंकायत)

अलीफ़ा अब्दुल मलिक के पास अेक बार अेक शप्स घबराया हुवा हाज़िर हुवा और कहने लगा : **आलीफ़ा !** मैं बेहद गुनाहगार हूं और ज़ानना याहता हूं के मेरे लिये मुआफ़ी भी है या नहीं ? **अलीफ़ा** ने कहा : क्या तेरा गुनाह ज़मीनो आस्मान से भी बडा है ? जवाब दिया : बडा है. **अलीफ़ा** ने कहा : क्या तेरा गुनाह लौहो कलम से भी बडा है ? उस ने कहा : बडा है : पूछा : क्या तेरा गुनाह अशो कुर्सी से भी बडा है ? जवाब दिया : बडा है. **अलीफ़ा** ने कहा : भाई यकीनन तेरा गुनाह अद्लाह पाक की रहमत से तो बडा नहीं हो सकता. येह सुन कर उस के सीने में थमा हुवा तूफ़ान आंभों के ज़रीअे उमंड आया और उस ने रोना शुरुअ कर दिया ! **अलीफ़ा** ने कहा : भाई आपिर मुजे पता भी तो यले के तुम्हारा गुनाह क्या है ? ईस पर उस ने कहा : **हुज़ूर !** मुजे आप को

करमाने मुस्तकः : صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर दस भरतभा दुइटे पाक पढे अल्लाह عزوجل उस पर सो रडमते नाजिल करमाता है. (طبرانی)

बताते हुअे बेडद नदामत डो रडी है ताडम अर्ज किये देता हूं, शायद मेरी तौबा की कोई सूरत निकल आअे. येड कड कर उस ने अपनी दास्ताने दडशत निशान सुनानी शुइअ की. कडने लगा : आलीजड ! मैं अेक कङ्कन योर हूं, आज रात मैं ने पांय कड्रों से ईअ्रत डसिल की और तौबा पर आमादा हुवा.

शराबी का अन्जाम

कङ्कन युराने की गरज से मैं ने जब पडली कड्र डोदी तो मुर्दे का मुंड किडले से डिरा हुवा था. मैं डौङ्कडदा डो कर जूं डी पलटा, के अेक गैबी आवाज ने मुजे योंका दिया. कोई कड रडा था : “ईस मुर्दे से अजाब का सबब तो दरयाङ्कत कर ले.” मैं ने डबरा कर कडा : मुज में डडडमत नडीं, तुम डी बताओ ! आवाज आई : येड शप्स शराबी और जानी था.

डिन्डीर गुमा मुर्दा

दूसरी कड्र डोदी तो अेक डिल डिला देने वाला मन्जर मेरी आंणों के सामने था ! क्या देडता हूं के मुर्दे का मुंड डिन्डीर जैसा डो युका है और तौक व जन्जर में जकडा हुवा है. गैब से आवाज आई : येड जूटी कसमें डाता और डराम डाता था.

आग की डीले

तीसरी कड्र डोदी तो उस में डी अेक डयानक मन्जर था. मुर्दा गुदी की तरङ्क जडान निकाले हुअे था और उस के जिरम में आग की डीले हुकी हुई थीं. गैबी आवाज ने बताया : येड गीबत करता, युगली डाता और लोगों को आपस में डडवाता था.

करमाने मुस्तफा : **عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَيْنِيَّةُ الْوَيْسَلْمُ** : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रुदे पाक न पढा तडकीक वोड बढ बप्त हो गया. (ابن سني)

आग की लपेट में

यौथी कब्र जोदी तो मेरी निगाहों के सामने अक बेहद सन्सनी भेज मन्जर था ! मुर्दा आग में उलट पलट हो रहा था और फिरिश्ते उस को आग के गुर्जों (या'नी आतशीं हथोड़ों) से मार रहे थे. मुझ पर अक दम दहशत तारी हो गई और मैं भाग पडा हुआ. मगर मेरे कानों में अक गैबी आवाज गूंज रही थी के येह बढ नसीब नमाज और रोजअे रमजान में सुस्ती किया करता था.

जवानी में तौबा का इन्शाम

पांयवीं कब्र जब जोदी तो उस की डालत गुजश्ता यारों कब्रों से बिडकुल भर अक्स (या'नी उलट) थी. कब्र उदे नजर तक वसीअ थी, अन्दर अक तप्त पर भूष सूरत नौ जवान बैठा हुआ था. गैबी आवाज ने बताया : इस ने जवानी में तौबा कर ली थी और नमाज व रोजे का सप्ती से पाबन्द था.

(تذكرة الواعظین ص ۶۱۲ ملخصاً)

﴿3, 4﴾ जोपडी में सीसा भरा हुआ था (हिंकायत)

﴿3﴾ उजरते अब्दुल मुअमिन बिन अब्दुल्लाह बिन इसा इरमाते हैं के अक कईन योर जिस ने तौबा कर ली थी, उस से मैं ने दरयाफत किया के कईन योरी के दौर में अगर तुम ने कोई सन्सनी भेज थीज देभी हो तो बताओ. इस पर उस ने कहा के मैं ने अक बार अक शप्स की कब्र जोदी तो उस के तमाम जिस्म में कीलें हुकी हुई थीं और अक बडी कील उस के सर में जब के दूसरी दोनों टांगों के बीच में पैवस्त थी. ﴿4﴾ अक और कईन योर से दरयाफत किया गया तो उस ने बताया के मैं ने अक जोपडी देभी जिस में सीसा पिघला कर भरा गया था.

(شرح الصدور ص ۱۷۳)

ईरमाने मुस्तफा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर सुबह व शाम दस दस बार दुइदे पाक पढा उसे क्रियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी. (مجمع الزوائد)

﴿5﴾ पुर असरार अन्धा (हिकायत)

अेक अन्धा त्मिकारी था जे अपनी आंभें छुपाअे रभता था, उस का सुवाल करने का अन्दाज ञडा अज्जब था, वोड लोगों से कडता : “जे मुजे कुछ देगा उस को अेक अज्जब बात सुनाउंगी और जे ञाईद देगा उस को अेक अज्जब चीज द्दिभाउंगी त्मी.” अबू ईस्हाक ईब्राहीम ईरमाते हैं : किसी ने उस को कुछ द्दिया तो मैं उस के पास ञडा हो गया. उस ने अपनी आंभें द्दिभाई, मैं येड देभ कर डेरान रड गया के उस की आंभों की जगड दो सूराभ थे जिन से आर पार नजर आता था. अब उस ने अपनी दास्ताने डेरत निशान सुनानी शुइअ की, कडने लगा : मैं अपने शइर का नामी गिरामी कईन योर था और लोग मुज से बेडद ञौकडदा रडते थे, ईत्तिफाक से शइर का काजी (या'नी जज) बीमार पड गया, उस को जब अपने बचने की उम्मीद न रडी तो उस ने मुजे (बतौरे रिश्वत) सो दीनार त्मिजवा कर कडला तेज के मैं ईन सो दीनारों के जरीअे अपना कईन तुज से मडकूज करना याडता डूं. मैं ने डामी त्मर ली. ईत्तिफाकन वोड तन्हुरुस्त हो गया मगर कुछ अर्से के बा'द इर बीमार हो कर मर गया. मैं ने सोचा के (रिश्वत की) वोड रकम तो पडले मरज की थी. दिडाजा मैं ने उस की कभ्र ञोद डाली. कभ्र में अजाब के आसार थे और काजी (जज) कभ्र में बैठा डुवा था और उस के बाल बिभरे डुअे थे और आंभें सुर्ष हो रडी थीं. ईतने में मैं ने अपने घुटनों में दद मडसूस क्रिया और अेक दम किसी ने मेरी आंभों में उंग्लियां धोप कर मुजे अन्धा कर द्दिया और कडा : अै बन्दअे ञुदा ! अद्लाड पाक के तेदों पर क्यूं मुत्तलअ डोता डै ?

(شرح الصدورص ۱۸۰)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : **عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ وَأَسْأَلُكُمْ** : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुःख शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (عبدالرزاق)

कब्र में दफ़न न हों तब भी जमा व सजा का सिख़िला होता है

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! कब्र का अजाब एक है. अजाबे कब्र दर अस्ल अजाबे बरज़ख़ ही को कहते हैं. ऐसे अजाबे कब्र ईस लिये कहते हैं के उमूमन लोग कब्र ही में दफ़न होते हैं वरना ज्वाह कोई शप्स जल जाये, डूब जाये, उस को मछलियां भा जायें, जंगल में दरिन्दे फ़ाड जायें, कीडे मकोडे भा जायें, या हवा में उस की राख़ उडा दी जाये हर सूरत में उस के साथ जमा व सजा का सिख़िला होगा.

बरज़ख़ के मा'ना

बरज़ख़ के लफ़्ज़ी मा'ना आड और पर्दा के हैं और मरने के बा'द से ले कर क़ियामत में उठने तक का वक़्फ़ा "बरज़ख़" कहलाता है. युनान्हे बरज़ख़ के मुतअल्लिक पारह 18 सूरतुल मुअमिनून आयत 100 में अद्लाह करीम फ़रमाता है :

وَمَنْ وَّرَأَيْهِمْ بَرَزَخَ إِلَى يَوْمِ
तरजमअे कन्ज़ुल ईमान : और उन के
आगे अेक आड है उस दिन तक जिस दिन
يَبْعَثُونَ ① उठाये जायेंगे.

उठरते सय्यिदुना मुजलिहद **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِدِ** ईस आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं के : **يَا نَبِيَّ الْمَوْتِ إِلَى الْبَعْثِ** - या'नी बरज़ख़ से मुराद मौत से ले कर क़ियामत के दिन दोबारा उठाये जाने की मुदत है.

(تفسیر طبری ج ۹ ص ۲۴۳)

अजाबे कब्र का कुरआन से सुबूत

अजाबे कब्र कुरआने पाक से साबित है. युनान्हे पारह 29 सूरअे नूह आयत 25 में उठरते सय्यिदुना नूह **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** नूह की

फ़रमाने मुस्तफ़ा : **عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** : जो मुज़ पर रोजे जुमुआ दुइद शरीफ़ पढेगा में क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत क़ुंवा. (جمع الجوامع)

ना फ़रमान कौम के तूफ़ान में गरक होने के बा'द अज़ाबे क़ब्र में मुब्तला होने का ईस तरह बयान है :

وَمَا خَاطَبْتَهُمْ أُعْرُقُوا فَأَدْخَلُوا أِنَارًا

(٢٩٧:نوح:٢٥)

तरजमअे कन्ज़ुल ईमान : अपनी डेसी भताओं पर दुबोअे गअे फिर आग में दाभिल किये गअे.

ईस आयते मुबारका के ईस छिस्से “फ़िर आग में दाभिल किये गअे” की तफ़सीर में लिखा है : **يَا هِيَ نَارُ الْبَرَزَخِ وَالْمَرَادُ عَذَابُ الْقَبْرِ** - उस आग से मुराद भरजभ की आग है और मुराद अज़ाबे क़ब्र है.

(روح المعاني جزء ٢٩ ص ١٢٥)

अज़ाबे क़ब्र के मुतअद्लिक पारह 24 सूरतुल मुअमिन आयत 46 में अह्लाह करीम फ़रमाता है :

النَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا

أَلَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ ①

तरजमअे कन्ज़ुल ईमान : आग जिस पर सुब्ओ शाम पेश किये जाते हैं. और जिस दिन क़ियामत काईम होगी हुकम होगा फिरओन वालों को सप्त तर अज़ाब में दाभिल करो.

ईस आयत में वाजेह तौर पर अज़ाबे क़ब्र का बयान है ईस तरह, के **أَشَدَّ الْعَذَابِ** (या'नी सप्त तर अज़ाब) से जहन्नम का अज़ाब मुराद है जो क़ियामत के दिन होगा ईस से पहले जो अज़ाब है वोह अज़ाब, अज़ाबे क़ब्र है. (عمدة القارى ج ٦ ص ٢٧٤, 862, जि. 2, स. 862, नुज़हतुल कारी, जि. 2, स. 862, 274)

अज़ाबे क़ब्र का तजक़िरा करते हुअे पारह 11 सूरतुतौबह आयत 101 में ईशा'द होता है :

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुज पर दुरदे पाक न पढा उस ने जन्नत का रास्ता छोड दिया. (طبرانی)

سَعِدٌ بِهِمْ مَّرَاتَيْنِ ثُمَّ يَرُدُّونَ
إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ﴿١٠١﴾

(प ११, التوبة: १०१)

तरजमअे क-जुल ईमान : जल्द लम उरहे
दोबारा अजाब करेगे फिर बडे अजाब की
तरफ़े केरे जाअेंगे.

मुनाफ़िकीन की रुस्वाए

उरते सय्यिदुना ईबने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا मजकूर। आयते मुबारका की तफ़सीर करते हुअे फ़रमाते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने जुमुआ के दिन ખुल्बा दिया और ईशाद फ़रमाया : “अै कुलां ખडे डो जा और निकल जा क्यूंके तू मुनाफ़िक है.” आप ﷺ ने मुनाफ़िकों का नाम ले ले कर उन को मस्जिद से निकाल दिया और उन को ખूब रुस्वा किया. फिर उरते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'उम रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ मस्जिद में दामिल हुअे तो अेक शप्स ने उरते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'उम रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से कहा : आप को ખुश ખबरी डो, अद्लाह पाक ने आज मुनाफ़िकीन को जलीलो रुस्वा कर दिया है. उरते सय्यिदुना ईबने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया के मस्जिद से जलील डो कर निकाला जाना पडला अजाब था और दूसरा अजाब, अजाबे कब्र है.

(مُلَخَّصٌ أُنْ: تَفْسِيرُ طَبْرِي ج ٦ ص ٤٥٧، عمدة القارى ج ٦ ص ٢٧٤)

अजाबे कब्र का हदीस से सुबूत

अजाबे कब्र के सुबूत में बे शुमार अहादीसे मुबारका वारिद हैं. उन में से सिर्फ़ अेक हदीसे पाक पेशे षिदमत है युनान्ये दो आलम के मालिको मुफ़्तार, शहन्शाहे अबरार رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ف़रमाते हैं :
- (نَسَائِي ص ٢٢٥ حديث ١٣٠٥) يا'नी कब्र का अजाब डक है.

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ पर दुर्रदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुज़ पर दुर्रदे पाक पढना तुम्हारे लिये पाकीजगी का भाईस है. (ابو يعلى)

सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीकह उज़रते अद्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ النَّوْفَى फ़रमाते हैं : अज़ाबे क़ब्र का ईन्कार वोही करेगा जो गुमराह है. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 113)

हम क्यूं परेशान हैं ?

भीठे भीठे ईस्लामी ल्माईयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ! हम मुसल्मान हैं और मुसल्मान का हर काम अद्लाह पाक और उस के उबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की भुशनूद्दी के लिये होना याहिये, मगर अफ़सोस ! आज हमारी अकसरियत नेकी के रास्ते से दूर छोती जा रही है, शायद इसी वजह से हमें तरह तरह की परेशानियों का सामना है. कोई भीमार है तो कोई कर्जदार, कोई धरेलू ना याकियों का शिकार है तो कोई तंगदस्त व बे रोज़गार, कोई औलाह का तलब गार है तो कोई ना फ़रमान औलाह की वजह से बेज़ार. अल गरज़ हर अेक किसी न किसी मुसीबत में गिरिफ़्तार है. अद्लाह करीम कुरआने पाक में ईशाद फ़रमाता है :

وَمَا أَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ

أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُو عَنْ كَثِيرٍ ﴿٣٠﴾

(२०५. الشورى: ३०)

तरजमअे कन्जुल ईमान : और तुम्हें जो मुसीबत पड़ोयी वोह उस सबब से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया और बहुत कुछ तो मुआफ़ फ़रमा देता है.

भीठे भीठे ईस्लामी ल्माईयो ! यकीनन हुन्या व आभिरत की परेशानियों का उल अद्लाह पाक और उस के उबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की फ़रमां बरदारी में है : मन्कूल है : - يَا نَبِيَّ إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ "जो शप्स अद्लाह पाक का फ़रमां बरदार बन जाता है तो अद्लाह पाक उस का कारसाज व मददगार बन जाता है." (روح البيان ७ ص १६)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शप्स है. (مسند احمد)

नमाज़ की बरकतें

मुसल्मानों के लिये सभ से पहला इर्ज़ नमाज़ है मगर अफ़सोस, के आज हमारी मस्जिदें वीरान हैं. यकीनन नमाज़ दीन का सुतून है, नमाज़ अद्वाल करीम की फ़ुशानूदी का सभब है, नमाज़ से रहमत नाज़िल होती है, नमाज़ से गुनाह मुआफ़ होते हैं, नमाज़ भीमारियों से बचाती है, नमाज़ दुआओं की कबूलियत का सभब है, नमाज़ से रोज़ी में बरकत होती है, नमाज़ अंधेरी क़ब्र का यराग है, नमाज़ अज़ाबे क़ब्र से बचाती है, नमाज़ जन्नत की कुन्ह है, नमाज़ पुल सिरात के लिये आसानी है, नमाज़ जहन्नम के अज़ाब से बचाती है, नमाज़ भीठे भीठे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की आंभों की ठन्डक है, नमाज़ी को ताजदारे रिसालत, शफ़ीअे उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शफ़ाअत नसीब होगी और नमाज़ी के लिये सभ से बडी ने'मत येह है के एसे बरोजे क्रियामत अद्वाल पाक का दीदार होगा.

बे नमाज़ी का नाम दोज़्ब के दरवाजे पर

बे नमाज़ी से अद्वाल पाक नाराज़ होता है. फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : जिस ने कस्दन (या'नी जान बूज़ कर) नमाज़ छोड दी, जहन्नम के दरवाजे पर उस का नाम लिख दिया जाता है.

(حِلْيَةُ الْأَوْلِيَاءِ ج ٧ ص ٢٩٩ حديث ١٠٠٩٠)

सर कुयलने की सज़ा

“बुभारी शरीफ़” में है : शहन्शाहे फ़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सहाबअे किराम الرّضوان से फ़रमाया : आज रात दो शप्स (या'नी जिब्राईल व मीकाईल عَلَيْهِمَا السَّلَام) मेरे पास आअे और मुजे

कईनाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुज पर दूरद पढो, के तुम्हारा दूरद मुज तक पहुँचता है. (طبرانی)

अर्ज मुकदस (या'नी बैतुल मुकदस¹) में ले आये. मैं ने देखा के अेक शप्स लैटा है और उस के सिरडाने अेक शप्स पथर उठाये ढडा है और पै दर पै पथर से उस का सर कुयल रडा है, दर बार कुयलने के ढा'द सर फिर ठीक हो जाता है. मैं ने उन फिरिशतों से कडा : سُبْحَانَ اللَّهِ ! येड कौन हें ? उन्हों ने अर्ज की : आगे तशरीफ़ ले यलिये ! (मजीद मनाजिर दिभाने के ढा'द) फिरिशतों ने अर्ज की : पहला शप्स जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने देखा (या'नी जिस का सर कुयला जा रडा था) येड वोड था जिस ने कुरआन पढा फिर उस को छोड दिया था और ईर्ज नमाजों के वक्त सो जाता था. (بخاری ج ٤ ص ٤٢٠ حديث ٧٠٤٧ مَلْخَصًا)

कभ्र में आग के शो'ले (हिकायत)

अेक शप्स की ढहन झैत हो गई. जभ वोड उसे दईन कर के लौटा तो याद आया के रकम की थैली कभ्र में गिर गई है युनान्चे वोड अपनी ढहन की कभ्र पर आया और उस को षोदा ताके थैली निकाल ले. उस ने देखा के ढहन की कभ्र में आग के शो'ले ढडक रहे हें ! उस ने जूं तूं कभ्र पर मिट्टी डाली और गमगीन रोता हुवा मां के पास आया और पूछा : प्यारी अम्मीजान ! मेरी ढहन के आ'माल कैसे थे ? वोड ढोली : ढेटा क्यूं पूछते हो ? अर्ज की : “मैं ने अपनी ढहन की कभ्र में आग के शो'ले ढडक्ते देढे हें.” येड सुन कर मां रोने लगी और कडा : अईसोस ! तेरी ढहन नमाज में सुस्ती किया करती थी और नमाज के अवकात गुजार कर पढा करती थी (या'नी नमाज कजा कर के पढती थी).

(مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ص ١٨٩)

دينه

1 : नुज़्हतुल कारी, जि. 2, स. 874

इरमाने मुस्तफा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के जिक और नबी पर दुरुद शरीफ पढे बिगैर उठ गये तो वोह बदनबुहार मुदरि से उठे. (شعب الإيمان)

होलनाक कूवां

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! जब नमाजों को कजा कर के पढने की सजा येह है तो सिरे से नमाज न पढने वालों का किस कदर भौंफनाक अन्जाम होगी ! याद रभिये ! जो कोई जान भूज कर नमाज को कजा कर के पढेगा वोह “वैल” का मुस्तहिक (या’नी हकदार) है. वैल जहन्नम में अेक भौंफनाक वादी है जिस की सप्ती से भुद जहन्नम ली पनाह मांगता है. नीज जहन्नम में अेक “गय” नामी वादी है उस की गरमी और गहराई सब से जियादा है उस में अेक होलनाक कूवां है जिस का नाम “हब हब” है, जब जहन्नम की आग भुजने पर आती है अल्लाह पाक उस कूअें को भोल देता है जिस से वोह ब दस्तूर तउकने लगती है, येह होलनाक कूवां बे नमाजियों, जानियों, शराबियों, सूदभोरों और मां भाप को ईजा देने वालों के लिये है.

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 434 मुलम्भसन)

जहन्नम में जाने का हुकम

मन्कूल है के क्रियामत के दिन अेक शप्स को अल्लाह पाक की बारगाह में भडा क्रिया जायेगा, अल्लाह तबारक व तआला उसे जहन्नम में जाने का हुकम इरमायेगा. वोह अर्ज करेगा : या अल्लाह पाक ! मुजे किस लिये जहन्नम में लेजा जा रहा है ? ईशाद होगी : “नमाजों को उन का वक्त गुजार कर पढने और मेरे नाम की जूटी कसमें जाने की वजह से.”

(مَكاشفة القلوب ص 189)

बे नमाजी की सोहबत से बयो !

मेरे आका आ’ला हजरत, ईमाम अहमद रजा पान

फ़रमाने मुस्तफ़ा عَلَيْهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज़ पर रोज़े ज़ुमुआ दो सो बार दुइद पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (جمع الجوامع)

عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن नमाज़ तर्क करने के अज़ाब और बे नमाज़ी की सोहबत में बैठने की मुमानअत करते हुअे “इतावा रज़विय्या” (मुभर्रज़) ज़िह्द 9 सफ़हा 158 ता 159 पर फ़रमाते हैं : जिस ने कस्दन (या’नी ज़ान बूज़ कर) अेक वक्त की (नमाज़) छोडी उज़ारों भरस ज़हन्नम में रहने का मुस्तहिक हुवा, ज़ब तक तौबा न करे और उस की कज़ा न कर ले, मुसल्मान अगर उस की ज़िन्दगी में उसे (या’नी उस बे नमाज़ी को) यक लप्त (या’नी बिहकुल) छोड दें उस से बात न करें, उस के पास न बैठें, तो ज़रूर वोड (बे नमाज़ी) इस (बायकाट) का सज़ावार (या’नी लाईक) है. (बे नमाज़ी की सोहबत से बयने की ताकीद मज़ीद करते हुअे सय्यिदी आ’ला उज़रत ने कुरआनी आयत पेश की है युनान्हे लिखते हैं के) अद्लाड पाक फ़रमाता है :

وَأَمَّا يُسَيِّئُكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ

तरजमअे कन्ज़ुल ईमान : और ज़ो कहीं

بَعْدَ الذِّكْرِ مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٧٧﴾

तुजे शैतान (बुलावे तो याद आअे पर

(٧٧: الانعام: ٦٨)

ज़ालिभों के पास न बैठ.

“तफ़सीराते अहमदिय्युड” में इस आयते मुबारका के तह्त लिखा है : यहां ज़ालिमीन से मुराद काफ़िरीन, मुभ्तदिईन या’नी गुमराह व अद दीन और फ़ासिकीन हैं. (تفسيرات أحمدية ص ٣٨٨)

कज़ा उम्री का तरीका

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! हमेशा नमाज़े बा ज़माअत का अेहतिमाम कीजिये हरगिज़ कोताही न फ़रमाईये और مَعَادَ اللَّهِ जिन के ज़िम्मे कज़ा नमाज़ें हैं सख्खी तौबा कर के फ़ौरन अदा करने की तरकीब करें. इस ज़िम्न में “मह्कूज़ाते आ’ला उज़रत” डिस्सअे अव्वल सफ़हा 125 ता 127 से अर्ज़ व ईर्शाद मुलाहज़ा फ़रमाईये : बा’ज़ हाज़िरीन ने अर्ज़

क़रमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ पर दुरद शरीफ़ पढो, **अवलाद** تُمْمِمْ تُمْمِمْ تُمْمِمْ

(ابن عدي)

किया के लुज़ूर दून्यवी मक़्द़ात ने औसा घेरा है के रोज़ ईरादा करता हूं आज कज़ा नमाज़ें अदा करना शुर्अ कर दूंगा मगर नहीं होता ! क्या यूं अदा क़ुं के पहले तमाम नमाज़ें इज़ की अदा कर लूं फिर जोदूर की फिर और अवकात की, तो कोई हरज है ? मुज़े येह ली याद नहीं के कितनी नमाज़ें कज़ा हुई हैं औसी डालत में क्या करना चाहिये ? ईशाद : कज़ा नमाज़ें जल्द से जल्द अदा करना लाज़िम है, न मा'लूम किस वक्त मौत आ जाये, क्या मुश्किल है के अेक दिन की भीस रक़्अतें छोटी हैं (या'नी इज़ की दो रक़्अत इर्ज़ और जोदूर की यार इर्ज़ और अस्र की यार इर्ज़ और मगरिब की तीन इर्ज़ और ईशा की सात रक़्अत या'नी यार इर्ज़ और तीन वित्र वाजिब) इन नमाज़ों को सिवाये तुलूअ व गुर्ब व ज़वाल के (के इस वक्त सजदा व नमाज़ ना जाईज व गुनाह है) हर वक्त अदा कर सकता है और इप्तियार है के पहले इज़ की सब नमाज़ें अदा कर ले, फिर जोदूर, फिर अस्र, फिर मगरिब, फिर ईशा की या सब नमाज़ें साथ साथ अदा करता जाये और इन का औसा हिसाब लगाये के तप्मीने (या'नी अन्दाजे) में बाकी न रह जायें ज़ियादा हो जायें तो हरज नहीं और वोह सब ब कदरे ताकत रफ़ता रफ़ता जल्द अदा कर ले, काहिली न करे. जब तक इर्ज़ जिम्मे पर बाकी रहता है कोई नफ़ल कबूल नहीं किया जाता. निख्यत इन नमाज़ों की इस तरह हो मसलन सो बार की इज़ कज़ा है तो हर बार यूं कहे के "सब से पहले जो इज़ मुज़ से कज़ा हुई" हर दफ़आ येही कहे. या'नी जब अेक अदा हुई तो बाकियों में जो सब से पहली है. इसी तरह जोदूर वगैरा हर नमाज़ में निख्यत करे. जिस पर बहुत सी नमाज़ें

फ़रमाने मुस्तफ़ा : صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ पर कसरत से दुर्रुदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज़ पर दुर्रुदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मज़ि़रत है. (ابن عساکر)

कज़ा हों उस के लिये सूरते तफ़्हीफ़ (या'नी कमी की सूरत) और जल्द अदा होने की येह है के ખाली रकअतों (या'नी जोहूर, अस्र व ईशा की आખिरी दो और मगरिब के इर्ज़ की तीसरी रकअत) में बज्जअे अल हम्द शरीफ़ के तीन बार **سُبْحَانَ اللَّهِ** कहे, अगर अेक बार त्नी कल लेगा तो इर्ज़ अदा हो ज्जअेगा नीज़ तस्बीहाते रुकूअ व सुजूद में सिर्फ़ अेक अेक बार **سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ** और **سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى** पढ लेना काफ़ी है. तशद्दुद के बा'द दोनों दुर्रुद शरीफ़ के बज्जअे **اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَآلِهِ**. वित्रों में बज्जअे दुआअे कुनूत के **رَبِّ اغْفِرْ لِي** कलना काफ़ी है. तुलूअे आइताब के बीस मिनट बा'द और गुरुबे आइताब से बीस मिनट कब्ल (तक) नमाज़ अदा कर सकता है. ईस से पडले या ईस से बा'द (या'नी तुलूअ व गुरुब के मुत्तसिल बीस बीस मिनटों में) ना ज्जईज है. हर अैसा शप्स ज़िस के ज़िम्मे नमाज़ें बाकी हें छुप कर पढे के गुनाह का अे'लान ज्जईज नही. (या'नी येह ज़ाहिर करना गुनाह है के मुज़ पर कज़ा नमाज़ें हें या मैं कज़ा नमाज़ें पढ रहा हूं वगैरा)

(ईसी सिस्सिले में सख्खिदी आ'ला हज़रत ने मज़ीद ईशा'द फ़रमाया) अगर किसी शप्स के ज़िम्मे तीस या यादीस साल की नमाज़ें हें वाजिबुल अदा, उस ने अपने उन ज़रूरी कामों के ईलावा ज़िन के बिगैर गुज़र नहीं कारोबार तर्क कर के पढना शुरूअ किया और पक्का ईरादा कर लिया के कुल नमाज़ें अदा कर के (ही) आराम लूंगा और इर्ज़ कीजिये ईसी डालत में अेक महीने या अेक दिन ही के बा'द उस का ईन्तिकाल हो ज्जअे तो अद्लाह पाक अपनी रहमते कामिला से उस की सब नमाज़ें अदा कर देगा. **قَالَ اللَّهُ تَعَالَى** : (या'नी अद्लाह पाक फ़रमाता है :)

करमाने मुस्तफ़ा : **عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** : जिस ने किताब में मुज पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिफ़ार (या'नी बफ़िशिश की हुआ) करते रहेंगे. (طبرانی)

وَمَنْ يَخْرُجْ مِنْ بَيْتِهِ مُهَاجِرًا
إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ يُدْرِكُهُ
الْبُوتُ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ ط
(پ، ۵۰، التسلط: ۱۰۰)

तरजमअे कऱुल ईमानः और जो अपने घर से निकला अल्लाह व रसूल की तरफ़ छिजरत करता हैर उसे मौत ने आ लिया तो उस का सवाब अल्लाह के जिम्मे पर हो गया.

उम्र में छूटी है गर कोई नमाज जल्द अदा कर ले तू आ गफ़लत से बाज कर ले तौबा रब की रहमत है बडी कफ़्र में वरना सजा होगी कडी
(वसाईले बफ़िशिश (मुरम्मम), स. 712, 713)

गाफ़िल दरजी (मदनी बहार)

अेक ईस्लामी भाई उन दिनों पंजाब में दरजी का काम करते थे, किरदार **مَعَادُ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** ईन्तिहाई पराब था, नमाज की बिल्कुल तौफ़ीक न थी, लडाई त्रिडाई तकरीबन रोजमर्रा का मा'भूल था, जूट, गीबत, वा'दा बिलाफ़ी, गालम गलोय, योरी, बढ निगाही, झिल्में डिरामे देभना, गाने बाजे सुनना, राह यलती लडकियों से छोडपानी करना, मां बाप को सताना, अल गरज वोह कौन सी बुराई थी जो उन में न थी. उन की बढ आ'मादियों से तंग आ कर घर वालों ने उन्हें बाबुल मदीना (कराची) लेज दिया. उन्डों ने बाबुल मदीना (कराची) के अेक कारखाने में मुलाजमत ईप्तिवार कर ली, वहां लडकियां भी काम करती थीं, ईस लिये आदतें मजीद बिगड गई. अेक रोज उन को पता यला, के उन के मामूजाद भाई दा'वते ईस्लामी के **जामिअतुल मदीना** (गुलिस्ताने जौडर, बाबुल मदीना) में दर्से निजामी कर रहे हैं. वोह उन से मिलने पडोंये तो वोह ईन्तिहाई पुर तपाक तरीके से उन से मिले, उन्डों ने ईन्किरादी

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर अक दिन में 50 बार दुरुदे पाक पढे क्रियामत के दिन में उस से मुसा-फ़ला कर्ज़ (यान्नी हाथ मिलाउ)गा. (ابن بشكوال)

कोशिश करते हुअे उन्हें द्वा'वते ईस्लामी के हफ़तावार सुन्नतों त्भरे ईजतिमाअ की द्वा'वत पेश की जो उन्होंने ने कबूल कर ली. जब ईजतिमाअ में हाज़िर हुअे तो वहां किसी ने मक़तबतुल मदीना के रसाएल "बुद्धा पुजारी" और "कईन योरों के ईन्किशाफ़त" उन्हें तोड़के में दिये. क्रियाम गाह पर आ कर जब उन्होंने ने वोह रिसाले पढे तो पडली बार येह अेहसास हुवा, के वोह अपनी जिन्दगी बरबाद कर रहे हें, الْحَمْدُ لِلَّهِ उन्होंने ने उसी वक़्त गुनाहों से तौबा की और पन्ज वक़्ता बा जमाअत नमाज़ पढने की निय्यत कर ली और हर जुमे'रात पाबन्दी के साथ ईज़ाने मदीना (बाबुल मदीना) में डोने वाले सुन्नतों त्भरे ईजतिमाअ में शिर्कत करने लगे. सिक्सिलअे आलिया कादिरिय्या रज़विख्या में दाखिल हो कर गौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के मुरीद त्भी बन गअे. मामूज़ाद त्भाई की ईन्किरादी कोशिश की बरक़त से मदनी काइले में सफ़र की त्भी सआदत हासिल हुई. الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ आशिकाने रसूल की सोहबत की बरक़त से वोह द्वा'वते ईस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो गअे और ज़ामिअतुल मदीना में दर्स निज़ामी करने के लिये दाखिला ले लिया.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

येह रिसाला पढ लेने के
बा'द सवाब की निय्यत
से किसी को दे दीजिये

गमे मदीना, बकीअ,
मग़िरत और बे हिसाब
जन्नतुल क़िरदौस में आका
के पडोस का तालिब



10 शा'बानुल मुअज़्ज़म 1439 सि.हि.
27-04-2018

कईरमाने मुस्तकफा : عملی اللہ تعالیٰ عنیدہ والیہ وسلم : बरओके क्कियामत लोगों में से मेरे करीब तर वोड होगा जिस ने दुन्या में मुज पर क्कियादा दुइडे पाक पढे होंगे. (तरमदी)

माखुदुमराज

मطبुवे	कतब	मطبुवे	कतब
दारुल्फक्रीरुत	उमडे कतारी		कुरान
फरिद बक अशल मरकज अलुवला हुर	नजहे कतारी	दारुलकतब ऐलमिये हिरुत	तफ्किये हुरी
दारुलकतब ऐलमिये हिरुत	मकफहते कतलुव	दारुअहिये अलरुत अरबी हिरुत	रुवु अलमैनी
दहली	रअहत कतलुव	दारुअहिये अलरुत अरबी हिरुत	रुवु अलबियान
पेशावर	तुडकुरे अलुव अकतलुव	पेशावर	तफ्किये अत अहमदीये
मरकज अलसुत बरकत रुसा अलहनुद	शरु अलसुदुर	दारुलकतब ऐलमिये हिरुत	बखारी
मकतये अलमदीने बाब अलमदीने कुराजी	बेहारी शरुयेत	दारुलकतब ऐलमिये हिरुत	अलफरुदुस
मकतये अलमदीने बाब अलमदीने कुराजी	वुसूल अलअशुश	दारुलकतब ऐलमिये हिरुत	हलिये अलुवलय

कैडरिस

उन्वान	अकुरे	उन्वान	अकुरे
दुइडे शरीक की क्कजीलत	1	कअर में दईन न हों तब भी	
«1» अेक क्कईन योर की आपभीती (हिकायत)	1	जज्जा व सज्जा का सिलखिसला हुता है	7
आग की अन्जुरे	2	अज्जाबे कअर का कुरआन से सुभूत	7
काला मुर्दा	2	मुनाक़िकीन की रुसुवार्थ	9
कअर में बाग	3	अज्जाबे कअर का हदीस से सुभूत	9
«2» पांच कअरें (हिकायत)	3	हम कयूं परेशान हूं ?	10
शराभी का अन्जाम	4	नमाज की अरकतें	11
अिनज्जीर नुमा मुर्दा	4	बे नमाजी का नाम हुताअब के दरवाजे पर	11
आग की कीलें	4	सर कुयलने की सज्जा	11
आग की लपेट में	5	कअर में आग के शो'ले (हिकायत)	12
जवान्नी में तौबा का ईन्आम	5	हुलनाक कूवां	13
«3,4» अुपडी में सीसा अरुा हुवा था (हिकायत)	5	जहन्नुम में जाने का हुकुम	13
«5» अुर असरार अन्हा (हिकायत)	5	बे नमाजी की सुहुवत से अयो !	13
	5	कज्जा अुअ्री का तरीका	14
	6	गाक़िल दरुजी (मदनी अहलर)	17

नेक नमाजी बनने के लिये

हर जुमे'रात भा'द नमाजे मगरिब आप के यहाँ होने वाले हा'वते ईस्लामी के हफ्तावार सुन्नतों भरे ईजतिमाअ में रिजाअे ईलाही के लिये अच्छी अच्छी निव्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फरमाईये ☪ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी काफ़िले में आशिकाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ☪ रोजाना "फ़िके मदीना" के जरीअे मदनी ईन्आमात का रिसावा पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख अपने यहाँ के जिम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये.

मेरा मदनी मकसद : "मुझे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की ईस्लाह की कोशिश करनी है. ﷻ" अपनी ईस्लाह के लिये "मदनी ईन्आमात" पर अमल और सारी दुनिया के लोगों की ईस्लाह की कोशिश के लिये "मदनी काफ़िलों" में सफ़र करना है. ﷻ



M.R.P.
₹ 14



मकतबतुल मदीना की शाखें

अहमदआबाद : ईजाने मदीना त्री कोनिया बगीचे के पास, मिरजापूर. मो. 0919327168200
 मोडासा : ईजाने मदीना, भागे छिदायत सोसायटी, कोलेज रोड मो. 9725824820
 भउव्य : ईजाने मदीना, मेमण कोवोनी, बुन्याद नगर, दूंगरी शेरपुरा रोड मो. 9327522145
 सूरत : वलिया भाई मस्जिद, प्वात्र दाना दरगाह के पास. मो. 9377869225

E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com, Web : www.dawateislami.net